मेरे हिस्से का चाँद

(कविता-संग्रह)

अवनींद्र मान

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, 9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अवनींद्र मान

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-5536-888-1

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 150/-

MERE HISSE KA CHAND (POETRY) by Avenindra Mann

टूट चुका था जब,
रिश्ते निभाते हुए...
मुझे माँ याद आयी,
लोरी गाते हुए...
जीवन के प्रथम एहसास प्यारी माँ
स्व. श्रीमती विद्या देवी
को समर्पित

जीवन के साथ चलती कविताएं

अवनींद्र मान नए नहीं हैं, लेकिन हिंदी कविताओं के व्यावक परिदृश्य में उनका नाम नया है। उनकी खासियत यह है कि वे कविता की किसी खास शैली, खास मुहावरे, प्रचलित भाषा के साथ बंधे नहीं हैं। स्वभाव से ही नहीं, लेखन में भी वे मनमौजी हैं। विचार के नहीं, मन:स्थितियों के कवि हैं। लघु कविताओं के उनके पहले संकलन 'मेरे हिस्से का चांद' में उनके सुख भी हैं, दुख भी, निराशा भी, उत्साह भी, विद्रोह भी और सबसे बड़ी बात यह कि इन सबके बीच प्रबल जिजिविषा भी। एक कविता में वे लिखते हैं– 'रोज रोज गिरकर भी / मुकम्मल खड़ा हूं / मेरी दुश्वारियों, देखो / मैं तुमसे कितना बड़ा हूं।' एक दूसरी कविता में उनकी मन:स्थिति कुछ ऐसी है– 'ये तो दर्द सुकून पा जाता है / लिखते लिखते / वर्ना आंसुओं के / जनाजे कहां उठते हैं।' एक अन्य कविता में उनके जीने का अंदज़ कुछ ऐसा कि ज़िंदगी को भी रश्क हो जाए– 'ऐ ज़िंदगी / तेरी तहजीब का अन्दाजा नहीं मुझे / मेरे अंदाज़ का / तुझे भी तो अंदाज़ा नहीं है।'

'मेरे हिस्से का चांद' में मान की छोटी–छोटी कविताएं किसी सांचे में ढली या कोई नया सांचा गढ़ने को आतुर कविताएं नहीं हैं। वे ऐसी ही हैं जैसी ज़िंदगी हुआ करती है। मुसीबतों, राहतों, उलझनों और लाखों अंतर्विरोधों से भरी। इन सबके बीच संकलन में विगत प्रेम की एक बारीक–सी अंतर्धारा भी है। प्रेम की एक उदास अभिव्यक्ति जो हर कहीं उनकी कविताओं में दिखती है– 'नफ़रतें मिलीं इतनी कि / आदत में शामिल हैं / मैं बहुत देर तक / मुहब्बत कर नहीं पाता।' यह और बात है कि इस उदासी में भी कवि का आत्मविश्वास कभी डगमगाता नहीं है – 'सोचता हूं / तुझसे अब नाराज़ हो जाऊं / इससे बुरा / तेरा बुरा मुझसे सोचा नहीं जाता।'

जीवन के बारे में कोई धारणा नहीं बनानी या उसकी कोई खास दिशा तय नहीं करनी तो अवनींद्र मान की कविताएं पढ़ी जानी चाहिएं। इसमें एक आम आदमी के

जीवन के तमाम शेड्स इस अंदाज़ से मौजूद हैं कि पढ़ने वालों को उनमें अपने ही जीवन के अक्स नज़र आएंगे। कविताओं की कोई बंधी–बंधाई शैली नहीं है। भाषा में कोई बुनावट या बनावट भी नहीं। उनकी भाषा वैसी ही है जैसी अपने दैनंदिन के कार्यकलापों में हम इस्तेमाल करते हैं। मुझे उम्मीद है कि मान की इन सीधी–सादी लेकिन मन में उतरने वाली कविताओं का स्वागत होगा।

– ध्रुव गुप्त

मान की कविताएँ

कैसी कविताएं पढ़ना चाहते हैं आप। कौनसी, किसकी ग़ज़ल सुन कर आपका मूड सही होता है। किसकी याद में कुछ कहना चाहते हैं अपने आपको कहाँ ले जाना चाहते हैं और फिर से कहाँ लौट आना चाहते हैं। अगर कोई एक सवाल और एक जवाब नहीं है ज़िंदगी तो आप आगे बढ़ सकते हैं पढ़ सकते हैं अवनींद्र मान की इन कविताओं को।

इन कविताओं में आपको एक आदमी मिलेगा जो आपके कान में कुछ बोलेगा और फिर देर तक आपके जेहन को कुरेदेगा, कौन अपने जेहन को मशक्कत में डालना चाहता है, यदि आप हैं ऐसी हिम्मत वाले तो पढ़ सकते हैं इन कविताओं को जो पल बीतने से पहले कल हो जाती हैं। मेरा मतलब कम शब्दों में बड़ी कविता से है।

लोगों को सुनाने में अब तक हमने अपनी जुबान आवाज और न जाने कितने ही इमोशन्स को बेहिसाब खर्च किया है तो यह सही तरीका है कि अवनींद्र मान की कविता के बहाने ही सही खुद को भी कुछ खरी-खरी तो कुछ दो टूक सुना दी जाए। खुद को आईना दिखाने और खुद से देर तक नजरें मिलाने की है आपमें ताकत तो आगे बढ़ते रहिए कोई ना कोई कविता कांच के टुकड़े सी आकर जरूर लगेगी आपको। आप लहूलुहान तो बेशक होंगे मगर कांच के इस टुकड़े में खुद को देखने सँवारने का एक मौका भी आपको मिल जाएगा इस आदमी की इन लाइनों में।

माँ के बाद माँ याद रहती है, खो देने के बाद पिता, प्यार याद आता है तन्हाईयों में, दोस्त उदासियों में और उम्मीद? यह हर वक्त साँसों की तरह हमें पिरोए रहती है। समाज दुनिया के सौ-सौ तरह के रिश्तों में,टूटने बिछुड़ने के बाद भी फिर से मिलने, छूने,गले लग कर देर तक रोते हुए अपने ही किसी से शिकायत करने, उलाहना देने और अपना गुस्सा दिखा कर फिर से प्रेम करते रहने की, बस इन्हीं उम्मीदों के साये

अवनींद्र की रचना शृंखला में नजर आते हैं जो इन्हें 'मानजी मानजी' कहते लोगों की आँखों, अश्कों और उम्मीदों में आप यहाँ-वहाँ किसी छोटी कविता गोष्ठी में, किसी अचानक कर ली गई दोस्तों की चाय पार्टी में और कभी 'पार्टी' में आपको महसूस हो सकती है।

इन कविताओं में प्यार की तलाश, वात्सल्य की अनुभूति, जिम्मेदारियों से जुड़े सवाल, इंसानियत के इश्यू, दोगलेपन की गिजगिज और अहसानों का कर्ज चुकाने की नहीं तो महसूस करते रहने की नरम सी एक अपील सुनाई सकती है। इस कविता पुस्तक की भूमिका में यदि अवनींद्र का जीवट उसका जज्बा हौसला और जिद का जिक्र न हो तो यह अधूरी है। बकौल अवनींद्र ''ए ज़िंदगी, सुबह मिलना तो मुस्कुरा के मिलना, कल रात खुली आँख से तेरे ख्वाब देखे हैं मैंने...'' ''रोज-रोज गिर कर भी खड़ा हूँ, मेरी दुश्वारियों, देखो; मैं तुमसे कितना बड़ा हूँ।'' और यह भी कहीं लिख बैठा है ये रचनाकार, ''मेरे तलवों की टूटन पर जरा सी गुदगुदी करदे, फिर देखता हूँ ये सफर कितना बड़ा है'' और कभी-कभी अपने दर्द को गुस्से से गुजारते हुए हम इंसानों को कोसता है कि जाने आईना दिखाता है कि ''यूँ ही नहीं मेरी तलाश में कोई खोट रहा है, मैं ढूँढता रहा जिसे वो हर बंदा खामोश रहा है।''

''साहित्य की हैसियत का पता नहीं इस शख्स की शख्सियत और हमारी अपनी ज़िंदगी की पैमाइश के लिहाज से यह किताब धीरे-धीरे सही लेकिन बहुत देर तक और दूर तक याद रहेगी ऐसा मुझे महसूस होता है।

शुक्रिया दोस्त 'मानजी'

महेश

भूमिका

अवनींद्र मान की कविताएँ अपने आकार में जितनी छोटी हैं, अपनी अन्तर्निहित संवेदना के घनीभूत-घनत्व में उतनी ही बड़ी हैं।

अवनींद्र की कविताओं में काँटे पे बैठी हुई तितली, दुखों का नखरा, चाँद पे बिलखता पानी, आँसुओं के जनाज़े, नफ़रत की आदत, टूटते तारे की तलब, परेशान ख़्वाब, उजड़े हुए दयार का दरीचा, कुम्हलाई रूह, अन्दाज़ का अन्दाज़ा, मुस्कानों का तोल सभी कुछ तो है।

और सबसे उल्लेखनीय बात यह कि ये सब अवनींद्र की शख़्सियत में भी है।

अवनींद्र की कविताओं को पढ़ कर मन के दरवाज़े पर जो ख़ामोशी, ख़ुशबू और ख़ुमारी दस्तक देती है उसके बयान के लिये अलग से एक पूरी किताब लिखनी होगी।

अवनींद्र हिम्मत और हौसले की एक मिसाल है जो आसानी से नहीं मिलती।

रोज़-रोज़ गिरकर भी
मुकम्मल खड़ा हूँ
मेरी दुश्वारियो
देखो
मैं तुमसे कितना बड़ा हूँ!

मुझे नाज़ है कि अवनींद्र मेरा अनुज है।

अल्लाह करे ज़ोरे-क़लम और ज़ियादा।

आमीन।

विश्व कैन्सर दिवस-2024

लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

आभार

बस एक लंबी उबाऊ दर्द भरी बीमारी कैंसर से लड़ते-लड़ते दिन-ब-दिन अकेलापन बढ़ता रहा। कभी लड़खड़ाता कभी तो कभी हौसलों की अंधी दीवारों पे रोशनी लिखता रहा, और फिर कागज की जमीन पे कलम के बल पे चलने के प्रयासों के नतीजे का एक अंश है ये किताब!

मुझे प्राण देने वाले मेरे जीवन के सर्वप्रथम गुरु मेरी माँ स्व. श्रीमती विद्या मेरे पापा स्व. श्री जगवीर सिंह मान को पूरे दिल से मेरी ये कलम समर्पित है! मेरी बड़ी दी आशा जो मां के जाने के बाद और पहले भी मेरी दूसरी मां के पद पे हैं, और जो मेरे लेखन की पहली प्रशंसक हैं, उन्हें सादर नमन करता हूँ!

मेरी पत्नी अर्चना, जो मेरी लंबी बीमारी में मेरे मन को सदैव एक साथ महसूस कराया और तीसरी माँ बनीं! मैं तीनों मां को आभार प्रेषित करता हूँ!

अपने मित्रों का आभार, जो कभी मेरी जान से लगते हैं तो कभी जानी दुश्मन, सभी ने मुझे लिखने को उकसाया परिणामस्वरूप मेरी पहली किताब आपके हाथ में है! अच्छी लगे तो बताइएगा और कोई कमी लगे तो जरूर बताइएगा! आपके इस किताब के छूने भर से मुझे सुकून मिला!

माया सर का धन्यवाद जो मेरे हाथों से कुछ कागज छीनकर उन्हें एक सुंदर घर दे दिया!

विशेष आभार मित्र उमा जी का जिन्होंने मेरी इस पुस्तक को तैयार करने में मेरी बेहद मदद की, मेरी व्याकरण बच्चों जैसी है उसमें समझदारी डालने का बहुत-बहुत आभार!

आपका शुभेच्छु
अवनींद्र मान

1

किसी कांटे पे बैठी हुई तितली से पूछना...
जब भी अकेले में मेरे बारे में सोचना...

2

उसने पूछा,
आप रोते हैं?
हमने कहा,
न,
बस नज़रिया धोते हैं...

3

सोचता हूं,
तुझसे अब नाराज़ हो जाऊं
इससे बुरा
तेरा बुरा
सोचा नहीं जाता

4

लो आज फिर मैंने
एक दोस्त खो दिया
वो जरा करीब आया
और मैं रो दिया

5

जब भी खफा हुई
तेरी तरह
मेरी खुशियां ही हुईं
मेरे दुखों ने
कभी कोई
नखरा नहीं किया

6

ले आज,
फिर इक गुनाह कर के जियूं
ऐ जिंदगी,
आ तुझसे भी प्यार कर के जियूं

7

रोज रोज गिरकर भी
मुकम्मल खड़ा हूं
मेरी दुश्वारियों
देखो,
मैं तुमसे कितना बड़ा हूं...

8

उसके रुखसार पे,
देखी है एक नदी मैंने,
किसी ने देखा है कभी
चाँद पे बिलखता पानी..?

9

चेहरा मेरा शफ्फाक है
वो सोचते हैं,
मेरे आंसुओं के निशां,
मेरे आंसू ही पोंछते हैं...

10

ये मेरी उदासियों में
शराब किसने मिला डाली
कोसने चला था जिसे,
उसी को दुआ दे डाली..!

11

ये तो
दर्द सुकून पा जाता है
लिखते लिखते...
वर्ना आंसुओं के
जनाजे कहां उठते हैं!

12

दर्द हो तो
छुपाऊं क्यूं?
मैं अपनी औकात से
बाहिर जाऊं क्यूं?

13

नफ़रतें इतनी कि
आदत में शामिल है,
मैं बहुत देर तक
मुहब्बत कर नहीं पाता..

14

हर आईने में नजर आती है
तेरी सूरत,
तूने मुझको कभी
संवरने न दिया...

15

सलवटें पेशानी पे मेरी
यूं ही नहीं लिखीं गयीं
दर्द लिक्खा जब खुदा ने
मेरा हाथ छोटा पड़ गया

16

जी चाहता है
भर लूं तुझे
सीने में
सांस की तरह
फिर थाम लूं
इस दिल को,
धड़कने भी न दूं

17

टूट जाऊंगा मैं खुद ही
एक तारे की तरह
उसकी इक दुआ को
टूटते तारे की तलब है

18

राह को परख
रहनुमा बदलते है
उनसे क्या राब्ता रखूं
जो पल में
खुदा बदलते हैं

19

उजड़े हुए दयार का
वो दरीचा सा बन जिया हूं मैं
दीमक की तरह खा गयी
तेरी दस्तक की तमन्ना जिसे

20

हाथ की लकीरों में
बहुत कुछ महदूद है
बहुत कुछ खो चुका
बहुत कुछ महफ़ूज़ है

21

इलाज–ऐ–इश्क
जहर नहीं ऐ दोस्त
निकल गली से उनकी
शहर बहुत बड़ा है

22

आईना सच का है
झूठ के पत्थरों से लड़ा है
जितना टूटा है उतना ही
आंखों में गड़ा है
मेरे तलवों की टूटन पर
जरा सी गुदगुदी कर दे
फिर देखता हूं ये सफर
कितना बड़ा है

23

ऐ बेहया मन
तहजीब रख
अपने दांतों के दायरे में
अपनी जीभ रख

24

बड़ा मुश्किल है
मोहब्बत में दिल होना...
जैसे मुश्किल है
हंसीं चेहरे पे तिल होना...
कलेजा रेत कर,
माथे को चूम लेता है
बड़ा मुश्किल है
मेरे यार सा कातिल होना...
जाम पे जाम उठाता हूं
तन्हा मैं बैठकर
और फिर देखता हूं
खुद का ही महफ़िल होना...

25

ऐ मुकद्दर मेरे
जरा तहजीब रख
मेरी जिन्दगी मेरी है
ताकीद रहे...!

26

लबों पे दर्द की
तान उठा लेता हूं
अपने सर सारे
इल्जाम उठा लेता हूं,
वैसे तो मैं भी,
तेरे जैसा ही मुजरिम हूं
तू उठाता है
झूठी कसमें
और मैं
जाम उठा लेता हूं...!!

27

तू
कितनी भी
कितनी भी
कितनी भी
दूर होती
काश तू
बेईमान नहीं
मजबूर होती

28

गर मेरा सनम
मेरी मोहब्बत को
हवा देता
तो क्या मंदिर क्या मस्जिद
उसी का आसरा होता

29

यूं ही नहीं
मेरी तलाश में
कोई खोट रहा है
मैं ढूंढ़ता रहा जिसे
वो हर बंदा
खामोश रहा है...!

30

एहसान का एहसास भर,
रह गए रिश्ते
आंख में फुसफुसा के
कह गए रिश्ते

31

कांधा सहला के
वो कुछ यूं कर गया
जख्म भरने आया था
अश्कों से भर गया

32

साथ लाती है
वो हर इक मंजर
यादें उसकी कुछ भी
छोड़कर नहीं आतीं

33

टूटे मन की चौखट पे
कोई फरियाद लाया है
वो कितना टूटा हुआ होगा
जो मेरे...
मेरे पास आया है...

34

फिर टूटना है मुझे
बिखर जाना है
कितना संगदिल जमाना है
लोग कहते हैं बहारे हैं
चाँदनी भी है...
मेरे हाथों में तो बस
इक टूटा हुआ पैमाना है...

35

शिद्दतें
बेइमान हो गई हैं आजकल
वर्ना गम तो
ताजिंदगी मज़ा देता है..!!

36

ख्वाब आंखों में
दर्द बन के उभर गया जैसे...
सदियों का सफ़र
लम्हों में बिखर गया जैसे...
ऐसी खुशबू है, खामोशी है
और खुमारी है
मेरे मन के दरवाज़े पे
कोई मर गया जैसे...!

37

ऐ मेरे दोस्त
मुझे भी
अपना सा बना दे
मुझे याद न कर
बस भूलना सिखा दे...

38

मेरी उपलब्धियां
मुझे अब
खोटी लगती हैं...
मेरे जिस्म से भारी
मुझे अब
रोटी लगती हैं...

39

हौसला कर
जख्म भी बिकते हैं यहां
सभी नंगे हैं...
जो शाही लिबास में
दिखते हैं यहां...

40

काश मेरी झुर्रियों में
कोई गुदगुदी कर दे
इस उम्र में फिर से
इश्क़ की बेहूदगी कर दे...!!

41

गर आईने पत्थर के होते
तेरा अक्स लाजबाब होता...!!

42

ज़िक्र कभी इश्क़ का उट्ठे
तो न कोई सवाल रखना
कभी मेरा खयाल आये तो
बस अपना खयाल रखना

43

अपने ग़म को भी
हम तो सिला देते हैं
बहुत शोर करते हैं
तो शराब पिला देते हैं...

44

दोस्ती का दोस्तों
कुछ ऐसा नाता है...
नया जब जख्म देता है
पुराना याद आता है...!

45

लहू लहू था ज़िस्म मेरा
रूह भी कुम्हलाई थी
मां से लिपटकर रो लिया
वो सबसे बड़ी दवाई थी...

46

ऐ जिंदगी...
तेरी तहजीब का अन्दाजा नहीं मुझे...
मेरे अंदाज का
तुझे भी
अंदाजा नहीं है...!!

47

तोल कर देख लेना मेरी मुस्कानें,
तेरी खिलखिलाहटों पे भारी पड़ेंगी!

48

कलम की नोक पे
स्याही न उतरे तो
छिटकना पड़ता है
खयाल जब मेहबूब तलक
न पहुंचे तो
सिसकना पड़ता है...

49

दिल्लगी थी महज वो
तुझे हमसे
कहां प्यार था
मेरा वजूद तो
तेरे खिलौनों की
फेहरिश्त में शुमार था...

50

ये कितना शोर होता है
जब कोई बात नहीं करता
कितने जवाब उभरते हैं
जब कोई सवालात नहीं करता
दोस्त बाजू भर भर के मिलते हैं,
पीठ फैलने लगती है
जब कोई घात नहीं करता ...

51

इक तो मेरा दर्द है
गिर जाता है
रात बिस्तर में...
इक मेरी जिद
हर सुबह मेरा सर
तकिये से उछाल देती है...!!

52

वो इतनी शिद्दत से
देखना उसका
उसी पल जान गया था
ये मुलाकात,
आखिरी होगी...

53

आपकी मुहब्बत ने
ज़र्रे को जमीन लिख दिया
टेढ़ी मेढ़ी जिंदगी को
मुस्तकीं लिख दिया...

54

यूं ही नहीं
छप गयीं
बिगड़ी हुई रेखाएं
मेरे हाथ में...
उसने बड़ी मुश्किल से...
मेरे हाथों से...
अपना हाथ...
छुड़ाया था...!!

55

एक दीया उनके भी लिए
जिस घर में दीया जला नहीं...!!
एक दीया उनके भी लिए
जिन्हें घर क्या होता पता नहीं...!!
एक दीया उनके भी लिए
जिसने घर को घर समझा ही नहीं,
एक दीया उनके भी लिए
जिस मन में दीपक जला नहीं...!!

56

किसी की बात
लिखते लिखते
किसी की याद
लिखते लिखते
आ ही जाती है,हिचकी
गति अवरोधक सी...!!

57

चश्मे–नम और मेरी
तन्हाई की धूप तले
खिल रहे हैं तेरी
खलिश के सफेद गुलाब...

58

ज़ब्त–ए–नफ़्स तो देख मेरी पलकों का
सोख लेती है हर इक पैमाना–ए–गम
वर्ना हर रात मेरे बिस्तर में
साथ मेरे इक समंदर सोता

59

यूं आंख भर के न देख लेना
मुझसे जुदा होते हुए
उम्र भर तेरी आंखें
खाली न रहेगी...

60

दवा का नाम होता है
हौसलों का नहीं मगर,
मैंने दवा पे जख्म रखे
दवा को फायदा हुआ!!

61

पलकों की दहलीज पे ही,
संभल जाते हैं
हौसले मेरे समंदर भी
निगल जाते...

62

न जाने कितनी ही
यादों
वादों की क़ब्र
अपनी रूह में
लिए
फिरता है आदमी
न जाने
कितनी ही बार
अपनी ही
नजरों में
गिरता है आदमी...

63

चोट पे क्या रखूं
मरहम
या
किसी की परवाह??

64

कोई हवा
कोई पानी
न किसी मौसम का,
ऐतबार रहता है...!
गुलाबों को
खिलने के लिए
सर्दी का नहीं
मेरे हमदम
मुहब्बतों का
इंतजार रहता...

65

फ़कत इस बात पे,
खफा हो जाते हैं...!
कि जब वो सामने आते हैं,
तो हम क्यूं मुस्कुराते है?

66

टटोल लेना मन
उनको विदा करते ही
अपने लोग
खरोंच जाते हैं
छूने के बहाने से...
छोड़ना तीर
इनकी फितरत है
कोई मतलब नहीं इनको
किसी निशाने से...

67

धुएं
मेरी शिकायतों के,
वहीं से उट्ठे,
जिक्र से मेरे
जहां रिश्ते
सुलग उट्ठे...!!

68

किसी के हिस्से की
धूप, रूप,
धूल, फूल,
हंसी, खुशी,
चहक, महक,
हवा, दवा,
खयाल, रूमाल,
रोटी, बोटी,
स्नेह, मेह,
की तलब नहीं मुझे
बस इतनी सी ख्वाहिश है,
मुझको हासिल जो टुकड़े हैं,
बांट के खा लूं...

69

वो कहते हैं
यूं चौड़े में रोना
अच्छा नहीं होता
अबे
सूने बिस्तर पे
पड़े पड़े तकिए भिगोना
भी तो अच्छा नहीं होता...!!
वो कहते हैं
मर्द होके रोता है,
दरद नहीं होता मरद को,
अबे,
जो मरद नहीं रोता,
वो अपना दरद,
थमा देता है औरतों को
वो सीख चुका होता है,
औरत को रुलाना...!!

70

सुबह फिर ओढ़ना है,
नया नकाब चेहरे पे,
ज़िन्दगी न जाने कब,
झूठी कसम सी हो गयी...

71

तू भला कहे
बुरा कहे
सब अच्छा
तेरी आवाज
मेरे ज़ख्मों को
दवा देती है...

72

मन की मत सुनियो रे,
पगला गया है
छोटे छोटे गमों से ये
घबरा गया है
मेरा चाँद आज सुबह
होने से पहले
कुछ जुगनुओं की राख
संभला गया है

73

अबे ये क्या
कि तुम मुझे भूल जाते हो?
भूल जाते भी हो तो,
ये बात,
खुद को क्यूं बताते हो?

74

कोई किसी का क्यूं नहीं होता,
कोई किसी को क्यूं नहीं रोता,
हर कोई काट रहा ग़मों की फसलें,
कोई भला खुशियां क्यूं नहीं बोता!

75

जैसे हर बाग में
फूलों की खुशबू नहीं होती,
वैसे हर रूह में
वो पीली सी
तितली नहीं होती।

76

क्या हुए वो दोस्त, वो रिश्ते,
जो पूछ के,
बता के मिले
सुकूं उन्हीं से मिला,
अचानक से जो आ के मिले...

77

जब भी कोई
उम्दा ख्वाब बुनता हूं
जाने क्यूं
लोग जगा देते हैं

78

पापा
सर्द दिसंबर में,
कोई धूप,
मुझे धूप न लगी...!
तुमसे जब खाया न गया,
मुझे भूख न लगी...!!

79

चोंच में कुछ
तिनके दबा लेता हूं
कोई छूता है प्यार से
मैं वहीं
घोंसला बना लेता हूं...

80

तेरी खुशबू
सीने में इस कदर समायी है
सांस जब भी ली
मेरी आंख भर आयी है...

81

यूं बरबस ही प्यार आया तो
चूम लिया सोते हुए
वो झुंझला के बोले,
ख्वाब तोड़ दिया तुमने...

82

टूटा गर तेरा खिलौना तो
वो खिलौने की कमी है
आ अबकी बार
तू मुझको आजमा...

83

न कर अब इश्क की बातें
कि बुत हो गया हूं मैं
न मुझमें जिस्म बाकी है
न मुझमें जान बाकी है...
मैखाने में दाखिला
किस लिहाज से होगा,
न मुझमें हौसला बाकी
न दीवाना बाकी है...
अब तो खेल मयख़्वारी का
ऐसे ही खिलता है
उसी को मय नसीब है
जिसकी बांहों में साकी है...

84

आज तन्हाइयों को
गौर से देखा मैंने
मेरी रुसवाइयों के सिवा
कुछ भी तो न था...

85

दिमाग ही दिमाग
भरे हैं जिस्म में
दिल की हैसियत पूछ
दिमाग खराब न करो...

86

टूट अपनी ही
रूह में
बिखर बिखर जाता हूं
इससे ज्यादा
कोई मुझको
और क्या सज़ा देगा...

87

कभी लिहाज किया
उसकी संवेदनाओं का,

तो मैं खुद वेदना सा
बन के रह गया....!!

88

सभी यादों
सभी वादों
को दफ़्न कर
आज भी
महज इतनी सी ख्वाहिश है
तू जहां भी
जिस हाल में रहे
तुझमें प्रेम हो
तुझे
प्रेम महसूस भी हो...!

89

मुझे यूं ही ना पड़ गयी
लत मैखाने की,
उसने इक बार
बहुत देर तक
देखा था मुझे...!

90

बहू का मन कैसा भी हो,
मां को खटकता है।
आखिर जो दिल का टुकड़ा है,
वो दो हिस्सों में बंटता है।

91

कल रात एक
परेशां सा ख्वाब देखा है,
कि तुम
मुझसे परेशां होकर
परेशां बहुत हो।

92

वो जिस पल तेरी
रूह बेलिबास हो जाती है,
बस उसी पल तू मेरी
प्यास हो जाती है।

93

आज न जाने क्यूं
भीग गयीं आंखें
एक बच्चे ने जो पूछे
आदमी शब्द के मायने ...

94

उसकी आंखों में लरजते आंसू,
समंदर सा रुआब रखते थे।
ओक से पी जाते थे वो मैख़ाना
हम कहां बोतल और गिलास रखते थे...

95

आदमी पे आदमी
चढ़ा हुआ है,
फासला फिर भी
कितना बढ़ा हुआ है ...

96

मेरी इश्किया फितरत का भला वो कैसा मंजर था
मेरी छाती थी बंजर सी, उसके हाथों में खंजर था,
कि आंखें सुर्ख थीं दोनों की, दुनिया की निगाहों में
थी उसकी आंख में शोखी मेरी आंखों में कंकर था...

97

ये सोच के
बड़ा घबराता हूं,
कि
क्या मैं भी
तुझे कभी
याद आता हूं...

98

कैसे
कैसे भूल जाऊं
तेरी बेबस निगाहों को
उन्हीं से तो सीखा मैंने
पुरुष का स्त्री होना

99

मेरी आंखों में
न कभी लहू आता,
गर हवाओं की तरह जाके
तुझे छू आता।

100

पाप
अपने आप
बिना ब्राह्मण उतर जाए,
काश कोई
अपने मन से नहाए
तो गंगा भी
साफहो जाये।

101

मेरी चाह मुकद्दस
हौसला बगावत
मेरी आंखें जीनत
मेरी नजर हिमाकत

102

हरकतें रूह की जब भी
तुझे यादों में लायी हैं,
आंखों से सांसें लीं
और हिचकियां
हिचकिचाई हैं।

103

अब न आती है
तुझ जैसी हो गयी,
शायद नींद जो
आंखों में आ पड़ जाती थी,
ख़्वाबों की नजर से
गिर गयी शायद...

104

जवाब पता था फिर भी
सवाल किया मैंने,
अपने अश्क़ों के लिए जैसे
रूमाल किया मैंने।

105

ज़िन्दादिली
बहुत कुछ छीन लेती है,
में तो सिर्फ
मुस्कुराया ही था...!

106

वो जब भी मुझसे
रूठकर जाता है,
दुनिया को कहता है कि
मुझसे पूछकर जाता है।

107

मैं जिंदगी से यूं
निबाह रखता हूं,
मुझसे नाराज है
फिर भी उसी की
चाह रखता हूं...!!

108

मेरे खुदा को शिकायत है
कि पूजता नहीं हूं मैं,
और मेरी चाहत है उसे
चाहना, चाहता हूं मैं,
उसे खुदा बनने का जज़्बा है,
मुझे चाहत का जुनून है,
न उसे करार है,
न मुझे सुकून

109

पूछते हो तुम
नफरतें इतनी सस्ती क्यूं हैं
तो सुनो
मुहब्बतें समझदार हो गयी हैं...

110

कोई खुशी खरीद पाता हूं
ना ही कोई गम बेच पाता हूं
फिर भी मैं ना जाने क्यूं
हर रोज हाट पे जाता हूं

111

चल लौट चल ऐ जिंदगी
हर शय जहां हसीन थी
हर सुबह जब गुलाब थी
हर शाम मुस्तकीं थी
न कोई तिश्नगी थी जब
न कोई टूटी जमीन थी
हर ख़्वाब पे खुलता आसमां
हर चीख बेहतरीन थी!!

112

नहीं है संगीन कोई भी मामला...
अगर गौर से नहीं,
प्यार से देखा जाये...!!

113

राह अब किसी की,
किसी से नहीं मिलती,
सभी बेवजह ही गुजर कर रहे हैं।
तस्दीक मंजिलों की
कहां हमारे बस में
हमसफर बिना ही हम सफ़र कर रहे हैं...!!

114

इतना पी लूं कि कोई खयाल न रहे,
कैसे टूटा दिल मेरा सवाल न रहे।
उट्ठे मेरा जनाजा निकले गली से उनकी,
देखा नहीं उन्होंने ये मलाल न रहे।

115

उदासी ही
उसके दामन की
तमन्ना जगाती है,
वर्ना किस बेटे को कब
अपनी मां याद आती है।

116

तेरी चाहत,
भूल के भी
कहां रखूंगा!
वो मेरा दिल ही होगा
सबसे छुपा
जहां रखूंगा...!

117

भौचक्के से
देखते रहे
उसको बिंदास
हंसते हुए,
फिर बरबस ही
कसमसा के
खीसे निपोर दीं ...

118

काश
तुझे जब भी
पनाहों की
जरूरत रहे
तेरी रूह को
मेरी बांहों की
जरूरत रहे...

119

अपनी पड़ी पे रोया,
तो क्या रोया,
अश्क़ में दम तो,
गैरों के गम से आता है।

120

अजब पैमाना बन बैठा हूं
न जाने कैसी फितरत का
बिखरता हूं तो टूट जाता हूं
टूटता हूं... तो बिखर जाता हूं...

121

काश
तू जब भी
कुछ भूलना चाहे,
याद रह जाऊं मैं
तुझे हर उस पल में

122

निकले थे घर से
हाथ में खंजर लेके,
ख़ाक छानी गली गली
खुद से बढ़कर कोई
गुनहगार न मिला।

123

हार मेरी
अधूरी सी बनी रही,
काश तुम बता तो देते,
कि
क्या जीता तुमने...?

124

ये हवा ही तो है
जो रुक सी गयी है
ये घटा गमों की
जो झुक सी गयी है...
मेरे माथे पे...
धुली हुई संवरी हुई
इक करीने से ढली हुई...
तोहमत बनकर...

125

कैसे देख पाओगे वो,
जो पहले से ही दिखाई देता रहा,
करवटें बदलने से नींद,
और बिस्तर बदलने से ख्वाब
नहीं बदलते।

126

मुद्दतों बाद,
मेरे सामने वो आई है,
अब भला कैसे कह दूं कि
वो हरजाई है,
कुछ इस अंदाज से
तकती रही मुझको,
जाने क्यूं ऐसा लगा,
वो मेरी ही तन्हाई है।

127

चुभता होगा तुम्हें
पापा का बेबस पुकारना,
कभी उसी शिद्दत से
बेटे को पुकारना.. .

128

मां के माथे पे सलवटें देखो,
तुम्हारे बिस्तर से,
ज्यादा करवटें बदलती हैं...

129

यूं ही नहीं मैं
मैख्वार हो गया,
एक बार बड़ी देर तक
देखा था उसे.. .

130

बदन तो
रेशमी लिबास में खुश है,
ये ज़मीर हरामखोर
चीथड़ों सा रह गया...

131

लगाकर गले जो दुश्मनी का,
रिश्ता निभाया आपने,
तमाम शहर इस रस्म का,
दीवाना हो गया।

132

ऐ मेरे दोस्त
मुझे भी
अपना सा बना दे,
मुझे याद न कर
बस भूलना सिखा दे।

133

कब तक महफूज़ रखूं,
तेरी यादों के पानी को,
आंखों के साहिल,
दिन-ब-दिन,
कमजोर हो रहे हैं...!!

134

सुनो,
यूं न सोचो कि
तुम्हें भूल जाता हूं
तुम जितनी याद आती हो
मैं उतना मुस्कुराता हूं...

135

मैं टूट चुका था,
जब रिश्ते निभाते हुए,
मुझे मां याद आयी,
लोरी गाते हुए...

136

इश्क वो जो पंख खोले फड़फड़ा दे,
वो नहीं जो पैरों को बेड़ियां पिन्हाए,
दर्द वो जो जिंदगी को जिंदा रक्खे,
और जीने की तमन्ना को जिलाए...

137

हिन्दू मिलते हैं,
मुसलमान भी मिलते हैं,
न जाने क्यूं,
मेरे वतन में अब,
इंसान नहीं मिलते।

138

तू ही नहीं ऐ दोस्त,
जो अकेला खफा था,
मैंने जिससे भी मिन्नतें रक्खी,
वो हर शख्स खुदा था!!

139

जब भी देखता हूं मैं
बिन बेटी पिताओं को,
ऐसा महसूस होता है
पुरुष भी बांझ होता है।

140

मैं अब किस आवाज
किस अंदाज
किस एहसास
से पुकारूं तुझको
कि मुझमें मेरा जैसा
अब कुछ भी ना रहा।

141

सरे आम दस्तूर-ऐ-साकी
वो निभा रहे थे
कोई गैर पी रहा था
वो खुद पिला रहे थे,
उनकी इक निगाह पे
जाँ-निसार हो जाती
पर उस वक़्त वो कहां हमसे
नज़रें मिला रहे थे...!!

142

हाथ उठ जाते हैं आदतन आंखों की तरफ...!
जबकि खुश्क रहती हैं वो भी मेरे होंठों की तरह...!

143

चेतनाओं की सरहद पे
कुछ नीम सी उदास हरकतें
उम्मीद के सिरहाने
हलकी हलकी
संवेदनाओं की धरती पे
पैर पटकती हुई बोलीं,
आवे तो आजा ...
नहीं तो...भाड़ में जा....!!

144

मैं देर तक
आईना देखता रहा,
फिर थक के
आईना ही बोला
चल झूठे....!

145

मेरी वफाओं का उसने
कुछ ऐसा सिला दिया,
मुंह मोड़ते ही मुझसे
वो मुस्कुरा दिया।

146

टूटा बहुत हूं
मैं मगर
मुझमें
मेरा मैं,
बहुत से टुकड़ों में
एक टुकड़ा सा
मैं,
अभी भी बाकी है
ऐ बेशर्म ज़िन्दगी
तेरे लिए काफी है...

147

कौन कहता है कि मैं
कायल हूं मैखाने का,
सूरत-ऐ-साकी ने
दीवाना बना रक्खा है।
घूमता रहता है वो
शमा के इर्द गिर्द बेबस,
न जाने कौनसी मिट्टी से
परवाना बना रक्खा है।

148

गम
नसीहतों के साथ दिये तूने,
दोनों से वफ़ा निभा रहा हूं,
गम
अपना चुका हूं,
नसीहतें, बांट रहा हूं।

149

वो गर नशा है तो,
बोतलों में बन्द क्यों नहीं,
गर इश्क़ है तो,
खुले आम,
निकलता क्यूं नहीं?

150

मुझको मेरी चाहत का
ये कैसा उपहार दिया
इतना तो जीये भी नहीं
जितना तुमने मार दिया...

151

मैं जिंदगी को यूं
तबाह रखता हूं,
जो मेरा न हुआ उसकी,
चाह रखता हूं।

152

दोस्ती का दोस्तों,
कुछ ऐसा नाता है।
नया जब जख्म देता है,
पुराना याद आता है...!!

153

मेरी दुआओं में तो,
बेलिहाज चली आती हो...!
जिसमे तुम नहीं हो,
वो बद्दुआ किसको दूं...?

154

ये तू ही तो थी जिसे
ख्वाबों में बसाए रखता था,
अब तो तेरे खयाल से
रूह सिहर जाती है...।

155

उसने अजब हैरतें जाहिर कीं देर तक,
बाद मुद्दत,
मुझमें इश्क़ को मौजूदा देखकर।

156

मैं अब भी वो ही
अंदाज रखता हूं
फना होके भी तुझको,
राज रखता हूं।

157

खुली आंख से जो कम्बख्त,
बर्दाश्त नहीं होता,
जाने क्यों रोज,
ख़्वाबों में चला आता है

158

उंगलियां, अंगूठे,
कलाइयां, बाजू,
कांधे,
और दिल,
सब मिलकर हिलाते हैं हाथ,
बना लेते हैं
दोस्त,
और फिर दिमाग चलता है,
इस्तेमाल के लायक,
माल चलता है...

159

किसी भी खौफ से,
बेअसर होती है,
मिटटी,
हवा,
आग,
पानी,
और आत्मा,
और ये कम्बख्त इंसान,
सुना था,
इनसे मिल कर ही बना,
कायर... साला!

160

मैं जिस से नाराज हो जाऊं
ऐसा दोस्त कहां से लाऊं?

161

हरेक आंख में,
उपहास सी,
हरेक रिश्ते में,
मजाक सी,
निभाता हूं फिर भी,
इस शक्ल को,
खिलखिलाते हुए,
मुझसे मिलती है,
हर सुबह आईने में,
उदास सी।

162

क्यूं कोई किसी का नहीं होता...?
क्यूं कोई किसी को नहीं रोता...?
हर कोई काट रहा है गमों की फसलें...!
क्यूं कोई खुशियां नहीं बोता...?

163

रूह टटोली तो तेरी याद के खंजर निकले
मय मैं डूबे तो तेरे इश्क के अंदर निकले
हम तो समझे थे होगी कोई चिंगारी
दिल टटोला तो आतिश के समंदर निकले।

164

मरी हुई तितली के पंख,
नर्मदा के किनारे पड़े टूटे से शंख,
मेरे चेहरे पे पड़ी
तेरी जुल्फों के कलंक,
आस्तीनों में
पाले हुए सांपों के डंक,
चुभते हैं मगर
सभी मेरे अपने हैं,
इन्हीं में डूबता हूं
आकंठ ...

165

तासीर एक है,
स्याही और इश्क़ की
बिखरे तो दाग
और उकेरो तो आग है

166

सांस तक खुशबू भरे
गुलाब पहुंचे तो,
रूह तक बहकी हुई
शराब पहुंचे तो,
तेरा हरेक कर्ज
चुकाने का दम रखता हूं,
मेरी मौत से पहले
तेरा हिसाब पहुंचे तो...

167

इश्क होना हमल के जैसा है...
जिसे हुआ नहीं उसे क्या पता...!!

168

जिन्दगी जहर सी,
बन गयी तो है लेकिन,
प्यास इसकी अब भी
रह रह के उठती है...

169

पत्तियों को,
फूलों को,
वो यूं उदास कर गया,
इक परिंदा
घर बनाते बनाते मर गया...

170

आंख का आंसू कभी
यूं हवा हो जाता है...
दर्द हद से गुजरे तो,
दवा हो जाता है...
आरजू सब्र से की जाए
असर करती है
सुना है
दिल सलीके से धड़के तो
दुआ हो जाता है।

171

मां की दुआओं का असर
अब साथ नहीं होता,
सर पे बोझ सा रहता है
मगर वो हाथ नहीं होता।

172

पीड़ा बड़ी है
या मेरा हौसला बड़ा होगा?
सच मेरा झूठ के
पत्थरों से लड़ा होगा।
मेरे पैरों की टूटन पे
ज़रा सी गुदगुदी कर दे,
सफ़र ताउम्र करूंगा
चाहे जितना बड़ा होगा...

173

तुम और मैं से
हम निकल गया,
बस उसी पल
खुशियों का
दम निकल गया...

174

क्या कहूं
क्या न कहूं
क्यों न कहूं
तू मेरी आरजू है,
मेरा हक़ है तुझ पे...

175

सर्दियों की शाख पे
खिल गया यूं ही,
मैं गुलाब हूं
हर मौसम के काबिल नहीं हूं

176

लो चाँद बुझा दिया,
अपना दिल जला दिया,
अब अगर तुम आ जाओ,
तो अंधेरों को जवाब दूं,

177

टूटा नहीं हूं मैं,
थोड़ा बिखरा हुआ सा हूं,
बटोर मत,
चुभ जाऊंगा...

178

सर्दी में सुकून के,
कुछ ऐसे पल आते हैं,
मैं और मेरी रजाई,
तन्हाई ओढ़ सो जाते हैं।

179

तुझे कहा था मैंने
बिन तेरे
जी न पाऊंगा
और तुझे रंज है
अभी तक,
जी रहा हूं मैं...

180

ऐ दोस्त
तेरे माथे की शिकन,
हो जाये गर,
मेरे आंखों की चुभन,
तो दोस्ती जिंदा है अभी...

181

ताउम्र तलाशा किया जिस हंसी को
वो आज खुद की ही बेचारगी पे आई है
किस किस को देता रहूंगा तोहमतें
जब अपनी जां खुद,
अपनी जान पे बन आई है

182

होंठों पे दर्द की
तान उठा लेता हूं
अपने सर पे सारे
इल्जाम उठा लेता हूं
वैसे तो मैं भी ....
तेरे जितना ही मुजरिम हूं...
तू उठाता है
झूठी कसमें
और मैं
जाम उठा लेता हूं...!!

183

मुद्दतों बाद भी,
मिल जाओगे तो,
क्या होगा,
तुम, तुम ही रहोगे,
मैं भी, मैं ही रहूंगा,
हार जाने के बाद,
खुद से,
कौन जीता
कौन बताएगा
तुम, या मैं?

184

सरकती रेत के साहिल पे बूंदों सा ज़िंदा हूं,
कि मछलियों को तरसता मैं परिंदा हूं...
कभी तू अपनी कश्ती में बिन पतवार चल दे तो,
मुझे बस याद कर लेना मैं भंवरों का बाशिंदा हूं...

185

जिसकी फितरत में मुहब्बत होती है
उसकी नफरतों में भी शिद्दत होती है...!

186

उसका चेहरा उसकी आंखें
और वो थरथराते लब
किसी और सफाई की अब,
जरूरत कहां रही...?

187

जिंदगी
बहुत दूर तक
ले आई है,
साथ कुछ भी नहीं,
बस वक़्त की परछाई है
बिखरा हुआ है
रूह की छत पे
तीखा सन्नाटा
उसपे पसरी हुई
मेरी बूढ़ी तन्हाई है!!

188

मौत को हराम,
भला किस तरह कह दूं,
इस जहां में अब तो,
जीना हराम है..

189

दो लफ्ज़ दो अशआर,
दो बंदिशें ही तो लिखनी थीं,
मगर कुछ ख्वाहिशें कमजोर थीं,
कुछ अदब भी परेशां था,
वर्ना ग़ालिब भी हो जाता,
मुझे किस गम ने रोका था!!

190

दर्द लफ़्ज़ों में नहीं,
सांसों में रखता हूं,
दोस्त आस्तीनों में नहीं,
बांहों में रखता हूं..।

191

जिस्म नहीं
अब दिमाग मांगता है
झूठ का प्याला सच की
शराब मांगता है
थक गया है अब
जिस्मों की गंध से
जेहन अब रूह का
अभिसार मांगता है

192

मैं भला कैसे
जिंदगी के
नग्मे गाऊंगा...
तुझसे प्यार करूंगा,
तो खुद को भूल जाऊंगा...

193

क्या बेमुरव्वत ख़ल्क़ है,
सब जमा बिस्मिल के पास,
तन्हा मेरा क़ातिल खड़ा
कोई नहीं क़ातिल के पास...!!

194

मैं तुझे छोड़ के जी लूंगा...
तेरा वहम अच्छा था
वर्ना तू भी
मेरी तरह
तन्हा होती...!!

195

ख्वाब
इतने भी न बुने जाएं
कि,
नींद को आंख से
बेदखल कर दें...

196

बांहों में भर लेने का
गुनाह किया था...
मुद्दत से सजा की तरह,
सीने में
धड़कती हो तुम...

197

बहुत सी बात करनी थी
ऐ जिंदगी तुझसे,
अफसोस
तू भी
दोस्त सी निकली।

198

मेरे हर जवाब पे
वो मुझे छोड़ जाता है
और मैं विक्रम,
फिर लाद लेता हूं
उसके एहसास को
अपने जुनूं की पीठ पर
बेताल की तरह।

199

ये मेरी उदासियों में शराब,
किसने मिला डाली...?
कोसने निकला था जिसको,
उसी को दुआ दे डाली...!

200

कैसी कैसी
घातें करता रहता है,
मुझसे मेरी ही
बातें करता रहता है,
मेरे उजले सफ़ेद
दिन की घड़ियों को,
काली काली... काली
रातें करता रहता है...

201

नर्म नर्म फूलों का
दिल निचोड़ लेती हैं,
पत्थर से दिल होते हैं
इन तितलियों के सीने में...

202

तराश ले अपनी रूह को,
उफक की मानिंद
अंधेरा जहां है,
सवेरा भी वहीं है...

203

मैं क्या जानूं
मेरी किस्मत में
क्या लिखा है,
मेरे हाथों में तो बस
मेरा
हौसला लिखा है...

204

सच भी झूठ का
तलबगार हो जाये,
आ तुझे इतना देखूं
कि
तुझ से प्यार हो जाए...

205

मुझसे मत पूछ
मेरी मुश्किलों का हिसाब,
बहुत सी मुश्किलों को
मुश्किल में छोड़ आया हूं...

206

अब दीवारों के कान
कहां होते हैं,
कोई एक रोता है
घर में सब सोते हैं...

207

कोई खुशबू,
कोई यार,
छूकर तो निकले,
कोई बाजू,
किसी का प्यार,
छूकर तो निकले,
निकल आये हैं हम,
हाथ में दस्तार लेकर,
मेरी गर्दन को कोई तलवार,
छूकर तो निकले।

208

दुआएं कर रही हैं मेरी तन्हाई की आहें,
तेरी राह तक रही है मेरी थकी निगाहें,
मेरे आंसूं का सबब तेरी याद नही हैं,
मुझको रुला रही हैं दोस्तों की सलाहें।

209

मेरी ज़िद
न छीनना मुझसे,
मैं तुझे छोड़ के भी
जीने की जिद रखता हूं।

210

खुद ही के दरीचे का ज़ाफ़री होना चाहता हूं,
मैं हर दोस्त के लिए आखिरी होना चाहता हूं,
अपने ही किये मासूम गुनाहों के लिए,
अपने ही खिलाफ मुखबिरी चाहता हूं ...

211

मेरी छत पे उतरी हैं कुछ,
जुगनुओं की परछाई,
जलती है, बुझती है,
साथ मेरी तन्हाई...

212

जरा सलीके से पढ़ना
मिरी रुबाई को,
लोग तूफान बना देते हैं
पुरबाई को,
दर्द में पुकार लो
जो किसी दोस्त को,
भीड़ बना देंगे
तन्हाई को।

213

मैं भला किस तरह
संभालूं
आप से रिश्ते...
एक जरा सी जुबां तो,
संभाली जाती नहीं मुझसे...

214

मेरा मोहसिन मुझे,
कब सदा देता है...
अपने अंदाज में,
बस बद्दुआ देता है...
वो वाकिफ है,
मौत मुझको सुकूं देगी...
हाथ उठाता है,
जीने की दुआ देता है....

215

सोचा था कि
ज़ख्म है
भर जाएगा,
क्या खबर थी कि
रगों में उतर जाएगा,
ठीक लिक्खा था
मेरे हाथों की लकीरों में,
तू अगर प्यार करेगा,
तो मर जाएगा।

216

न ले अब
ऐ ज़िन्दगी
सहारा दुआओं का,
अब तो घर भी बिक चुका
अपने खुदाओं का...!!

217

रहमतों की
भीख सी मांगती
मेरे हाथ की
खुश्क लकीरों में,
मेरा अपना सा तो
कभी कुछ भी न था...!
ले तेरी रूखी,
बेरुखी ने,
इन्हें भर दिया,
रक्तिम बिवाइयों से,
अब इनकी पीर भी,
मेरी ही कहलाती है...।

218

बड़ा मुश्किल है मोहब्बत में दिल होना,
जैसे मुश्किल है हसीन चेहरे पे तिल होना,
कलेजा रेत कर माथे को चूम लेता है,
बड़ा मुश्किल है मेरे यार सा कातिल होना।

219

न पूछ तू
मेरी हैरतों का हिसाब
तेरे ही साफ़ दामन में
कहीं
बेगैरत सा
सिसक रहा होगा...!!

220

कभी कभी आभास होता है
सारी दुनिया को उतार लूंगा में
अपनी छोटी सी डायरी में,
सच तो ये है
मैं खुद
मेरी कलम से
कभी मेरा नाम भी
न लिख पाया ...!!

221

एक आस,
अधूरी प्यास का
टूटा जाम भरता हूं,
ऐ जिंदगी
देख
तेरी बेवफा
नजरों को भी,
अपनी उम्मीद के
चश्मे लगा
रोज
सलाम करता हूं...

222

हरेक दर्द से हमने,
तुझे जुदा रक्खा,
तुझे क्या पता हमने,
तुझे कहां कहां रक्खा...

223

कभी दीया सा,
कभी धुआं सा,
कभी बुझती हुई,
यादों के कहकशां सा,
कभी अरमानों की चिता सा,
भभक के जलता है तू,
मैं भला कैसे
भूल जाऊं तुझको,
कि अब तो
आईने से भी निकलता है तू...!!

224

कर्तव्यों के फर्श
पे बुहारता समर्पण
नहीं देखने देता
देहलीज से आगे
निखरता मौसम ...!!

225

कभी कभी
मन करता
इतना
कच्चा हो जाऊं
बूढ़ा होने से पहले
दो पल को
बच्चा हो जाऊं...!!

226

किसी से बना न पाए,
बिगाड़ी ही रहे,
किसी को समझ न पाए,
अनाड़ी ही रहे,
खुद ही खुद के जीव का,
मोल भाव करते रहे,
कबाड़ी सा हुस्न पाया,
कबाड़ी ही रहे...

227

ऐ जिंदगी,
सुबह मिलना तो
मुस्कुरा के मिलना,
कल रात खुली आंख से
तेरे ख्वाब हैं देखे मैंने।

228

अपने मन की नदी को,
बहने से रोक नहीं पाया कभी,
बांध बहुत कसे,
शरीर की सीमाओं पे,
अभियांत्रिक दिमाग ने,
पूर्ण कौशल में मगरूर,
किन्तु,
उस नदी का प्रवाह,
इतना सच्चा सरल था कि,
झूठी शिक्षा,
झूठे संस्कार,
बस बजरी से बचे!

229

मैं तुझसे दूर हो चुका,
दुआ दे दूं तो,
तेरे शहर को चली,
खुशियों को
हवा दे दूं तो,
तुझे मेरी मुहब्बत पे
यकीं आ जाये,
मैं अपनी जिंदगी को,
बद्दुआ दे दूं तो।

230

यूं तो मैं
हर दिल अजीज कहलाता हूं
फिर भला क्यों
दोस्ती के गीत
तन्हा ही गुनगुनाता हूं...।

231

गर तेरी रूह में,
चंद लम्हे सफर होता
न मैं, मैं से मय होता
न हम से बेखबर होता...!!

232

ऐ जिंदगी,
तेरी यादों से लिपटकर,
बसर कर लूंगा,
तुझ बिन जीने की,
सजा कौन भरता है,
यूं न झुंझला के
मिला कर मुझसे,
दूर तुझसे जाने की,
दुआ कौन करता है...

233

ये
लिखते हैं प्रेम कथाएं,
पाते हैं पुरस्कार,
और फिर,
अक्सर प्रेम में
लव जेहाद ढूंढ़ते हैं...

234

हरेक दोस्त,
हरेक रिश्ता,
हसीं होने लगा है,
ये शहर भी अब,
अजनबी होने लगा है...

■ ■ ■